

२४२

शानिश्चस्तोत्र

धर्मरत्न वाङ्मन्त्राय सुरत श्री महाविहार

II-86

ॐ नमः श्रीगणेशाय नमः ॥ पुनर्मदवददामं सर्वगुहनिवालनं नमः ॥ नमः ॥
स्य सांख्यं चित्तु या मास पार्थिव ॥ लघु १ वं १ ॥ तु रि व्या गा वा जा द स ल थ यू ना च ऊ व
॥ ॥ सफ द्वि पा धि यो रु यो न ॥ रु रि का नं न नि स्ता लो दे व रु स्ता यि ना
हि स ॥ ॥ ग्रा हि मि रु दाय ला लु ग नि स्ता लो नि सा मु तं ॥ अ क गं रु द मि रु कं सु वा सु ल
रु यं क ल १ द्वा द सा यं रु इ रि कं रु दि ष्या नि सू त्रं ॥ ॥ य म रु लो न मा वा य म रि ती

विविन्नानामि वि सा ध नि स्ता ला ॥ ॐ स र्व वि न स र्व वि न ग नि वि सा ध य ह न १ रु रु ॥ ॐ
स र्व वि न १ ॥ ॐ स र्व वि न जी रु रु ॥ ॐ स र्व वि न अ गु रु रु ॥ ॐ स र्व वि न १ ॥ ॐ स र्व वि न
धी ॥ ॐ स र्व वि न १ ॥ ॐ स र्व वि न जी गुं टा रु रु ॥ ॐ स र्व वि न म हा यो न या त्र मि न य य रु
॥ ॐ स र्व वि न म हा व ज ग रु वि जी त या त्र मि ना यू रु ॥ ॐ ॥ ॐ स र्व वि न म हा व जी रु य
का नि या त्र मि ना यू रु ॥ ॐ स र्व वि न म हा रु व वी र्य या त्र मि ना गुं ॥ ॐ स र्व वि न म

धाजादिभिमनसासोत्रं नान्यमिहामिगवतं ॥ ७॥ मस्तुभनियारुं वलदलास्तु साधनं
 पुनत्रवत्तुविदुस्तुवेनंवनयसुयुगं ॥ ८॥ संघायनद्वननाजा कृगदुस्तुएवदुर्लभाध्याथया
 २५ मासहस्तात्मा ववमधमनिसुका धामनिप्रवारु ॥ ९॥ दसादुस्तुदुर्लभं रुविद्यार्कि रवि ३
 कदारुनं ॥ १०॥ किर्तिनरुमदियास्तु गेया कयिरुविद्यानि ॥ ११॥ पुनंवलंतुसंघाय दृष्टं नो
 मारुयाथिव ॥ १२॥ आयनिधनस्तुय सुखांयवदुर्लभा ॥ १३॥ धातामनमिदविग

लनाथविनायक ॥ राजादभनथस्तु सुत्रिनिदमथाक नानु ॥ १४॥ ॥ ॐ नमो ॥ रुद्राय
 निनाय सिखिकुनिनायव ॥ नमानि नमयुखाय निनायननिनाय ॥ नमानि नमस
 ददाय दिर्घमस्तुजगार्थे ॥ नमावि सातनगाय सुकादनरुयानम ॥ नम १५॥ नम १६॥ नम १७॥
 यस्तु तनामायवेनम ॥ नम १८॥ दिष्टाय सुकाय कालदुस्तु नमानम ॥ नम १९॥ नम २०॥
 य ॥ २१॥ निनिनायवेनम ॥ नमा धा नायवूडाय रिखनायकनालिन ॥ नम २२॥ नम २३॥

[illegible]

क्रिस्तुत्थिः ५ ॥ त्वया व शक्ति नासर्वे नासर्वे निसमं नग ॥ ४ ॥ अक्र मक्र मन्त्रा मन्त्रा ॥
 त्वय ४ सय नासका ॥ ५ ॥ अक्र मक्र मन्त्रा मन्त्रा ॥ ५ ॥ अक्र मक्र मन्त्रा मन्त्रा ॥ ५ ॥
 मा द्विपा ॥ ६ ॥ अक्र मक्र मन्त्रा मन्त्रा ॥ ६ ॥ अक्र मक्र मन्त्रा मन्त्रा ॥ ६ ॥
 मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा ॥ ७ ॥ अक्र मक्र मन्त्रा मन्त्रा ॥ ७ ॥ अक्र मक्र मन्त्रा मन्त्रा ॥ ७ ॥
 हसं वाचं ॥ ८ ॥ अक्र मक्र मन्त्रा मन्त्रा ॥ ८ ॥ अक्र मक्र मन्त्रा मन्त्रा ॥ ८ ॥

स

२४

वं कुहियदासामि ॥ १ ॥ यात्रयूननं ॥ दसनथउगाव ॥ अशयुहकनिमोलि विम
 दाकाशेनकस्यदिन ॥ देवासूलमनुरख ॥ यस्ययक्रिमत्रिह्या ॥ भनित्रुवार ॥ ग्रहार्थ
 नुग्रहास्यग्रहायिदाकनामना ॥ अशयार्थवत्रं तुल्यं ॥ तुल्यं तुल्यं ददामि न ॥ ४ ॥ लयापी
 कं तुल्यं पीकं ॥ यय ॥ ५ ॥ व्यंनिमानवा ॥ ५ ॥ ककात्रं द्विर्नवा ॥ यिदाम् ॥ ६ ॥ मिमस्य ॥ ६ ॥ दवासूल
 मनुरखानासिद्धिदिशाधनो लभ ॥ ७ ॥ मय्यल्लभ ॥ ७ ॥ नावायि ॥ ८ ॥ समिगकनामु ॥ ८ ॥ य

७

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाविहार

II-86